17/5/20

B.A. Part III
Hindi Hons
सगुण भक्ति काव्य

(1)

डॉ० अवन्तिका कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एस०एस० कॉलेज,
जहानाबाद

सूर का वात्सल्य वर्णन, क्रमशः —

~~[illegible]~~ ।

खेलन को मेरे दूर गयो ।
संग-संग धावत है तो बहुत अबेर भयो ।।

बाल कृष्ण आते हैं तब यशोदा कहती है कि तुम मुझे अब खेलने जाया करो। जाते हो आज गांव को हाऊ आया है —

खेलन दूर जात कित कान्हा।
आज सुनो बन हाऊ आयो तुम नहीं जानत कान्हा।।

कृष्ण सम्बन्धी वात्सल्य को हम दो भागों में बाँट सकते हैं - संयोग और वियोग। अक्रूर के गोकुल आने तक का भाग संयोग वात्सल्य के अन्तर्गत आता है और अक्रूर के साथ कृष्ण को मथुरा जाने तथा उसके बाद का भाग वियोग वात्सल्य के अन्तर्गत आता है।

यशोदा के सामने अक्रूर के साथ मथुरा जा रहे हैं। यशोदा रो रही है, व्याकुल हो रही है, मिन्नत कर रही है। उसकी छाती फट रही है। वह बाल कृष्ण देने को तैयार है पर चाहती है कि मेरा कृष्ण मेरी आँखों के सामने रहे —

इतनो ही सुख कमलनयन को अँखियन आगे
देखौं ।

यशोदा की सब चिन्ता की कन्हैया, छीना, बिछड़ना इत्यादि अपनी उत्कर्ष पर है जो अपनी आप में एक मिसाल है।

नन्द और यशोदा कृष्ण के वियोग में पागल से हो गये हैं। वे कान्ह-कान्ह की रट लगाये आँखों से अश्रु धार बहा रहे हैं —

नन्द जसोदा मारग जोहत नित उठि सांझ सबेरे।
यहूँ छिन-छिन कान्ह-कान्ह कहि टेरत अँसुवन बहत पनारे।।

कृष्ण के लिए व्याकुलता की भावना बढ़ती ही जा रही है —

वे दोउ भैया इनके लालन कहत रोहिणी रोई।

11/5/20 (2)

सूर का वात्सल्य उत्तर:

प्रथम उत्तर है कि सूर की वात्सल्य वर्णन में इतनी स्वाभाविकता कहीं नहीं मिलती। उत्तर है कि सूर बाल मनोविज्ञान के ज्ञाता थे। इसका प्रमाण बालकों के अन्तर्मन में प्रवेश कर के अनुभूत कराया था। उनकी भी इच्छा...

दूसरा यह कि सूर का वात्सल्य वर्णन अनेक रसों से युक्त है। सूर के कृष्ण साधारण बालक नहीं हैं। सूर के कृष्ण एक साधारण बालक हैं जो चोरी भी करते हैं, जिद करते हैं, रूठ जाते हैं, और माखन खाते हैं।

तीसरा कारण यह कि सूर को माँ का हृदय प्राप्त था। माता का हृदय ही वात्सल्य भाव की पूरी झाँकी दे सकता है।

चौथा कारण यह कि सूर ने वात्सल्य के माध्यम में यशोदा को जगह दिया है। यशोदा को उपालम्भ करके सूर का वात्सल्य वर्णन रात-रात भर जागने में ~~स्वप्न~~ उद्वेलित हो उठा है।

सूर के वात्सल्य वर्णन का अन्य कवियों से तुलना करने पर हम पाते हैं कि इस क्षेत्र में सूरदास श्रेष्ठ हैं। वाल्मीकि के रामायण में थोड़ा सा वात्सल्य वर्णन मिलता है जो सूर के सामने बहुत कम है। कवि शब्दों में कालिदास ने जो वात्सल्य का चित्र खींचा है वह कैलाश... भाव की मौलिकता का चित्र है। सूर जैसी स्वाभाविकता नहीं है। तुलसी दास ने जो कवितावली, श्रीकृष्ण गीतावली और रामचरित मानस में जो वात्सल्य का वर्णन किया है वह सूर के सामने सीमित हुआ है। हरि औध ने प्रिय-प्रवास में कृष्ण के तथा गुप्त जी ने यशोधरा में जो बाहुल्य वात्सल्य का वर्णन किया है वह तो सूर का नकल मात्र है। गुप्त जी के राहुल तो काफी सयाने हैं जो हमेशा को मारते थे तथा जिज्ञासा के अधिकार का विस्तार करते हैं। वर्तमान लोगों के बाल वर्णन में दार्शनिकता का पुट ज्यादा है। सूर जैसी स्वाभाविकता वात्सल्य के क्षेत्र में किसी को नहीं मिली है।

अतः मैं स्पष्टतः कह सकता हूँ कि सूर का दूसरा नाम वात्सल्य है और वात्सल्य का दूसरा नाम सूर है। सूर जैसा वात्सल्य वर्णन का चित्रकार आज तक दूसरा कोई न हो सका।